3

वितस्ता

मुख्य संपादिका प्रो. ज़ोहरा अफ़ज़ल

ISSN 0975-6663 Year: 2017 Vol. 43

Approved by U.G.C. No. 62745
New Delhi

हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय
(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा 'ए' ग्रेड)
श्रीनगर 190 006

नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिकता

डॉ. गौरी त्रिपाठी [redacted]

भारतीय साहित्य की परम्परा, मिथिला कोकिल विद्यापति का राग, कालिदास का सौन्दर्य, तुलसीदास का वैविध्य, कबीर और भारतेन्दु का व्यंग्य–विद्रोह, निराला की व्यापकता, केदारनाथ अग्रवाल की लोक–संवेदना, मुक्तिबोध् की बौद्धिकता के साथ युग–बोध् को यदि एक साथ कहीं देखना है तो वह अकेले नागार्जुन में ही देखा जा सकता है। नागार्जुन इकलौते साहित्यकार हैं, जिन्होंने लोकजीवन जैसे गम्भीर विषय को लक्ष्य बनाया, जिसमें तात्कालिकता की समय–सीमा को खारिज किया। नागार्जुन इकलौते साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी ,जनपक्षधरता के लिए वैचारिक विचलन को भी स्वीकार किया। साहित्य की शास्त्रीय परम्परा से लेकर उपन्यास, नई कविता, नवगीत आदि तमाम आधुनिक् साहित्यिक प्रवृत्तियों को यदि एक साथ देखना है तो नागार्जुन के साहित्य में देखा जा सकता है। अनेकानेक भाषाओं और विधाओं में लेखनी चलाने वाला यह रचनाकार् अदम्य शक्ति और साहस का प्रतीक है। अरचनात्मक मानी जाने वाली वस्तुओं को नागार्जुन की लेखनी का पारस रचनात्मक ही नहीं, सौन्दर्यसिक्त और सार्थक बना देता है– नागार्जुन ग्रामीण सभ्यता के साक्षात प्रतिमूर्ति थे, जाड़ों में खादी का बंद गले का भूरा सा गर्म कोट, गमछे में लपेटे कानों के ऊपर कनटोपा और बगल में महीने भर पहले का धुला शांति निकेतनी थैला। गर्मियों में कुर्ता–पाजामा... इस वेष–भूषा और छोटी दुबली काया थोड़ी कुबराई की और सांवली रंगत के अलावा हल्की भेंगी आँख, दस पन्द्रह डिग्री बाईं ओर को झुकी गर्दन और सामान्य से सामान्य चेहरे–मोहरे वाला यह आदमी कहीं से भी लेखक, कवि तो छोड़ कस्बाई, साफ–सुथरा, सलीकेदार स्कूल मास्टर

भी नहीं लगता। यह त
का आंतरिक मन आश
नागार्जुन प्रेमचंद की प
प्रेमचंद ने उत्तर प्रदेश
माध्यम से समस्त उत्त
वहाँ नागार्जुन ने मिथि
नागार्जुन का रचना सं
है। एक तरफ है प्रेम, सौ
दुर्व्यवस्थाओं, शोषण, अ
विद्रूप की रचनाएँ हैं।
रखने वाले बाबा का स्व
सुनाना स्वभाविक था।
करना उनके साहित्य
सामाजिक दुर्व्यवस्थाअ
समान टूटता है। किन्तु
की है, जिन्होंने लोक कल
किया। ऐसा भी हुआ कि
को मानवीय मूल्यों से
प्रतिक्रिया भी करते हैं।
नहीं, वे तो उस अगणि
और विरोध् जन्म देते हैं।
है कि उपन्यासों में आ
को प्रमाणित करते हैं। इन
सच को उजागर किया
'बाबा बटेसरनाथ', नद
उपन्यासों में पात्रों के ज
है। जमींदारों के अत्याचा
विवाह, ढोंग–पाखण्ड,
उठाया गया है। भारतीय
होने के कारण जातिग
अम्बार–सा लगा हुआ